नवाचार- 2

अभिनव शिक्षण तकनीक

INNOVATION CODE - JHK/18/02

छात्र केंद्रित शिक्षण प्रणाली को सफल बनाने के लिए शैक्षिक गतिविधियों में छात्रों की सहभागिता आवश्यक है। इसलिए अब पुस्तक बद्ध पढ़ाई से आगे बढ़कर विद्यालयों में आनुभविक शिक्षण प्रणाली पर जोर दिया जाने लगा है। समय और परिस्थितियों के अनुरूप शिक्षक अब नई–नई शिक्षण विधियों का समावेश छात्रों के दैनिक जीवन में घटने वाली गतिविधियों के साथ कर रहे हैं, ताकि छात्रों के लिए शिक्षा रोचक, प्रासंगिक और ज्ञानवर्धक बन सके। इसके प्रभाव से विद्यालय में छात्रों के कक्षानुकुल अधिगम स्तर में तो सुधार होता ही है अपितु बच्चों के लिए स्वयं सीखने का माहौल भी आसानी से तैयार हो जाता है। विभिन्न विषय अलग–अलग माध्यमों से रुचिकर और सरल बनाने की सोच और नीति अभिनव शिक्षण तकनीक नवाचार की नींव है।

नवाचारी शिक्षकों के नाम

1. नसीम अहमद, राजकीय माध्यमिक विद्यालय बरियातु, रांची
2. मलिन कुमार महतो, उत्क्रमित उ० वि० विद्यालय कल्याणपुर, सरायकेला खरसावन
3. दीपक कुमार, राजकीय मध्य विद्यालय गीता आश्रम, चतरा
4. तारामणि होरो, नव प्राथमिक विद्यालय मुण्डाटोला, मुर्रामकला, रामगढ़
5. दमयन्ती देवी, राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय कुजियाम्बा अड़की, खूंटी
6. मनोज कुमार रे, उत्क्रमित मध्य विद्यालय परसाटांड़, गिरिडीह
7. रबिन्द्र कुमार ओझा, राजकीय मध्य विद्यालय चिरौन्जिया, गढ़वा
8. गजाधर महतो, उत्क्रमित उच्च विद्यालय चक्रवाली, रामगढ़

नवाचार के लाभ

- विद्यालय में आनुभविक, प्रासंगिक और रुचिकर शिक्षा का विकास
- पठन–पाठन प्रक्रिया में छात्रों और शिक्षकों में सहभागिता
- छात्रों की स्मरण शक्ति और आत्मविश्वास में सुधार
- शिक्षकों के प्रोत्साहन स्तर में वृद्धि
- छात्रों की उपस्थिति दर में सुधार

प्रभाव क्षेत्र– सीखने के परिणामों में तथा कक्षा अनुकूल सीखने के स्तर में सुधार, विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिए समावेशी शिक्षा का सृजन, कक्षा में स्वयं सीखने का वातावरण

नवाचार का सार

अभिनव शिक्षण तकनीक नवाचार का क्रियान्वयन विभिन्न गतिविधियों के द्वारा किया जाता है। इसमें किसी विशेष टी.एल.एम की आवश्यकता नहीं है। इन गतिविधियों में सम्मिलित होने से छात्रों का सर्वांगीण विकास, विभिन्न विषय के पुनः अध्ययन और वास्तविक जीवन में उपयोगी कार्य–कुशलता का विकास होता है।

विभिन्न गतिविधियां

1. प्रार्थना सभा से सर्वांगीण विकास

संक्षिप्त परिचयः विद्यालय में प्रार्थना सभा छात्रों के दैनिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। दिन की शुरुआत में ही यदि छात्रों को शैक्षिक और सह–शैक्षिक गतिविधियों से जोड़ दिया जाए, तो इससे छात्रों की शिक्षा और नैतिक मूल्यों की नींव मजबूत होती है। इस गतिविधि में छात्रों को प्रतिदिन रोचक और ज्ञानवर्धक कार्यों में सम्मिलित होने का अवसर मिलता है, जिससे उनके शैक्षिक स्तर में तो सुधार होता ही है, साथ ही आत्मविश्वास, सामूहिक कार्य करने, और नेतृत्व कौशल का विकास भी होता है।

संविधान की प्रस्तावना

हम भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को : सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त करने के लिए तथा उन सबमें व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखण्डता सुनिश्चित करनेवाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई0 (मिति मार्ग शीर्ष शुक्ल सप्तमी, सम्वत् दो हजार छह विक्रमी) को एतद द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।"

यह गतिविधि एकल विद्यालयों के लिए बहुत लाभकारी है। इससे शिक्षक प्रार्थना सभा में ही छात्रों को कई विषयों के बारे में जानकारी दे सकते हैं।

विद्यालय/कक्षा में संप्रयोगः यह गतिविधि छात्रों के सामान्य ज्ञान, विषय संबंधी ज्ञान, योग और अभिव्यक्ति जैसी कलाओं को निखारने में मददगार है।

योजनाः विद्यालय के सभी छात्रों को चार समूह – नीले, हरे, पीले और लाल रंग– में बांट दीजिए। सभी समूहों का एक कप्तान और एक उपकप्तान चयनित कर दें। प्रार्थना सभा का संचालन बारी–बारी दो–दो दिन के लिए अलग–अलग ग्रुप से करवाएं। ये निर्धारण बाल–संसद के प्रधानमंत्री के द्वारा किया जा सकता है। मंच पर प्रधानमंत्री, ग्रुप कप्तान, उपकप्तान एवं शिक्षकगण उपस्थित रहते हैं। इस सभा में प्रत्येक ग्रुप के द्वारा बारी–बारी से उनके निर्धारित दिन में प्रार्थना करवाई जाती है।

क्रियान्वयनः प्रतिदिन प्रार्थना सभा में छात्रों को नई ऊर्जा और विचारों से सराबोर कर दे, इसके लिए विभिन्न क्रियाओं को सुनिश्चित किया जा सकता है।

- प्रार्थना सभा में संविधान की प्रस्तावना पढ़वाई जाती है। समाचार वाचन कराया जाता है। एक दिन हिन्दी तथा दूसरे दिन अंग्रेजी में।
- सामान्य ज्ञान के दस प्रश्नोत्तर सभा में पढ़कर सुनवाए जा सकते हैं।
- पाठ्य पुस्तक से दस प्रश्नोत्तर पढ़े जा सकते हैं।
- सप्ताह के हर दिन को रुचिकर बनाने के लिए विषयानुसार दिनों को बांटा भी जा सकता है। जैसे– छात्रों को सोमवार–बुधवार–शुक्रवार को पी. टी. तथा मंगलवार–गुरुवार–शनिवार को योग कराया जा सकता है।

बाल संसद क्या है ?

इस नवाचार के अंतर्गत विद्यालय में छात्रों की विभिन्न समितियों का गठन किया जाता है। यह समितियां विद्यालय सुव्यवस्थित रूप से चलाने और छात्रों के स्तर पर आने वाली समस्याओं का हल ढूंढने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसके अंतर्गत प्रधानमंत्री, उप–प्रधानमंत्री और समिति अध्यक्ष चयनित किये जाते हैं। समितियों के उदाहरण हैं– गृह समिति, शिक्षा समिति, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता समिति, खेलकूद समिति इत्यादि।

◆ कक्षा एक से पांच तक के छात्रों को प्रतिदिन 'MYSELF' यानि 'स्वपरिचय' बारी–बारी देने के लिए कहा जा सकता है, जिससे छात्रों की अभिव्यक्ति मुखर होती है, और अन्य विद्यार्थी वक्ता को ध्यानपूर्वक सुनते हैं।

◆ सभा का अंत राष्ट्रगान से कराया जाता है।

ध्यान दें– प्रतिदिन प्रार्थनास्थल पर उस दिन की कार्यप्रणाली तय कर सकते हैं जैसे कि किन कक्षाओं को लाइब्रेरी, प्रयोगशाला, खेलकूद तथा अन्य कक्षाओं में होने वाली किसी गतिविधि में सहयोग करना है। इसके पश्चात अधिगम स्तर सुधारने के लिए किस कक्षा में कौन सा पाठ पढ़ाया जाना है, यह भी ग्रुप कप्तान और उपकप्तान तय कर सकते हैं। सभा में ही उपस्थिति की समीक्षा, सफाई की जांच (व्यक्तिगत सफाई– नाखून, बाल, गणवेश इत्यादि) कर सकते हैं और प्रार्थना सभा समाप्त कर सकते हैं।

2. जिज्ञासा मंच

संक्षिप्त परिचयः बच्चे बहुत जिज्ञासु होते हैं, वे अपने दैनिक जीवन में घटित घटनाओं एवं आस–पड़ोस की वस्तुओं के बारे में जानने को आतुर रहते हैं। किन्तु ऐसा देखा गया है कि संकोच के कारण वह अपनी जिज्ञासा शिक्षक के सामने रख नहीं पाते। छात्रों को प्रश्न पूछने और अपनी जिज्ञासा शांत करने के लिए 'जिज्ञासा मंच' नामक यह गतिविधि लाभदायक है। छात्र मन में आने वाले प्रश्नों को 'जिज्ञासा पेटी' में डालते हैं और शिक्षक उनके प्रश्नों के उत्तर देकर उन्हें रोचक जानकारियां और ज्ञान देते हैं।

कक्षा में संप्रयोगः छात्र पाठ्यक्रम में जो पढ़ते हैं, इस गतिविधि के माध्यम से उसका महत्व और अनुभव दैनिक जीवन में सीखते हैं। छात्र किसी भी विषय, पाठ या सिद्धांत के बारे में प्रश्न पूछ सकते हैं। शिक्षक चाहें तो मौखिक रूप से या फिर टी.एल.एम के माध्यम से उत्तर प्रस्तुत कर सकते हैं। इससे छात्रों में तर्कसंगत सोच को बढ़ावा मिलता है और विषय संबंधी कई और पहलुओं के बारे में भी जानकारी मिलती है।

योजना/विधिः 'जिज्ञासा पेटी' बनाने के लिए खाली गत्ते के डिब्बे को बाहर से रंगीन कागज के साथ सजा कर उस पर 'जिज्ञासा पेटी' लिख सकते हैं। इस कार्य में छात्रों को सहभागी बनाने से उनकी रुचि गतिविधि में बढ़ती है।

क्रियान्वयनः शिक्षक चाहें तो सप्ताह में किसी एक दिन इस गतिविधि का क्रियान्वयन कर सकते हैं। वह चाहें तो पर्चियों को विषयानुसार छंटवाकर उत्तर दे सकते हैं, या फिर जो भी पर्ची हाथ में आए उसी क्रम में उत्तर दे सकते हैं। क्रियान्वयन प्रक्रिया को समझने के लिए कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं।

(पहला) विद्यालय के बगीचे में विभिन्न प्रकार के पेड़ पौधे लगाये जाने के बाद, छात्रों को अपनी जिज्ञासा पर्ची पर

लिख कर जिज्ञासा पेटी में डालने के लिए कहा जाता है। उसके बाद जिज्ञासा पेटी को खाली करके, शिक्षक इस विषय संबंधी उत्तर का मौखिक रूप से या टी.एल.एम के द्वारा समझा सकते हैं।

(दूसरा) छात्र ने प्रश्न पूछा कि सौर ऊर्जा से मोटर पंप के जरिये टंकी में पानी कैसे चढ़ता है तो शिक्षक जवाब दे सकते हैं कि– सोलर प्लेट सूर्य के प्रकाश को अवशोषित कर सौर्य ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित कर देता है। यह सोलर प्लेट पुनः विद्युत ऊर्जा को यांत्रिक उर्जा में परिवर्तित कर देती है। इससे मोटर स्वतः चलने लगती है और पानी टंकी तक पहुँच जाता है।

(अन्य उदाहरण) इसके साथ ही विद्यालय के आस–पास सीखने के अन्य अवसरों की भी तलाश की जा सकती है। जल के विभिन्न स्त्रोत, पौधों की संरचना, उनसे प्राप्त वस्तुएं व उनका प्रयोग, विभिन्न प्रकार के आवास, यातायात के साधन, डाकघर, बैंक, थाना इत्यादि स्थानों का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करते हैं और आत्मविश्वास के साथ नित नई चीजों के बारे जानकारी प्राप्त करते हैं।

ध्यान दें: छात्रों को जिज्ञासा पेटी में प्रश्न डालने के लिए पर्ची पर प्रश्न लिखने के साथ–साथ विषय भी लिखने के लिऐ कहें। क्रमानुसार छात्रों को विभिन्न विषयों के आधार पर पर्चियों को छांटने के लिए कहा जा सकता है। उसके बाद शिक्षक जिज्ञासा मंच पर विषय संबंधी एक समान प्रश्नों/ जिज्ञासाओं का उत्तर दे सकते हैं।

3. सहपाठियों द्वारा मूल्यांकन

संक्षिप्त परिचयः कक्षा में छात्रों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने के लिए सहपाठियों द्वारा मूल्यांकन एक रोचक गतिविधि है। इसमें शिक्षक छात्रों से श्रुतिलेखन/ प्रश्नोत्तर कार्य करवाते हैं। लेकिन शिक्षक छात्रों की कॉपी स्वयं नहीं जांचते, बल्कि छात्रों के बीच कॉपियों की अदला–बदली कर दी जाती है। सहपाठी सही उत्तर के आधार पर एक–दूसरे को अंक देते हैं। उसके पश्चात जो छात्र जिस बच्चे की कॉपी की जांच करता है, कक्षा में लगे 'मूल्यांकन चार्ट' पर उस बच्चे के नाम के समक्ष अंक लिख देता है।

कक्षा में संप्रयोगः यह गतिविधि कक्षा में छात्रों के अधिगम स्तर की नियमित जांच करने और पुनः अध्ययन के लिए लाभदायक है।

योजना/विधिः 'मूल्यांकन चार्ट' तैयार करने के लिए चार्ट पर एक तरफ सभी छात्रों के नाम लिख कर, उसके समक्ष 'दिनांक' और 'अंक प्राप्त' लिख दें। शिक्षक छात्रों के सहपाठियों द्वारा मूल्यांकन कराने की गतिविधि साप्ताहिक या नियमित अंतराल पर कर सकते हैं। इस गतिविधि से पूर्व शिक्षक छात्रों से निर्धारित विषय को

पढ़कर–तैयारी करके आने के लिए कह सकते हैं।

क्रियान्वयनः

◆ शिक्षक निर्धारित विषय पर छात्रों की परीक्षा लेते हैं। श्रुतिलेखन/प्रश्नोत्तर समाप्ति के उपरांत शिक्षक अपनी निगरानी में छात्रों को अपने सहपाठी की कॉपी जांचने का कार्य करवाते हैं।

◆ कॉपी जांच कर रहा छात्र अपने मित्रों के प्रति कोई भेदभाव न करे, इसके लिए शिक्षक उन्हें पक्षपात न करने की प्रेरणा देते हैं। तय समय में कॉपियों की जांच के उपरांत जो छात्र– जिस छात्र की कॉपी जांचता है, उसके नाम के समक्ष अंक लिख देता है।

◆ माह के अंत में चार्ट पेपर पर छात्रों को मिले अंकों की समीक्षा की जाती है, और जिस छात्र को सर्वाधिक अंक प्राप्त होते हैं उसे कक्षा में तालियों के साथ सम्मानित किया जाता है।

4. खिलौनों से सीखें विज्ञान

संक्षिप्त परिचयः बच्चों को अपने खिलौने बहुत प्रिय होते हैं। टूटने के बाद भी वह उन्हें फेंकते नहीं। इन्हीं खिलौनों की मदद से विभिन्न कक्षा स्तर के छात्रों को विज्ञान और गणित के सरल एवं जटिल सिद्धांत खेल–खेल में सिखाए जा सकते हैं। इसके लिए शिक्षक छात्रों को प्रोत्साहित करते हैं कि वह अपने टूटे हुए खिलौने कक्षा में लाएं, और सीखने–समझने की प्रक्रिया में सहभागी बनें।

कक्षा में संप्रयोगः यह गतिविधि विज्ञान/गणित से संबंधित पाठों को विस्तार से समझने और उनका पुनः अध्ययन करने में कारगर है।

योजना/विधिः शिक्षक छात्रों से किसी तय दिन टूटे हुए खिलौने लेकर आने के लिए कह सकते हैं। उसके बाद शिक्षक खिलौनों को उनके प्रकार (यानि गुड्डा–गुड़िया, गाड़ी, पिस्तौल इत्यादि) के आधार पर अलग–अलग कर दें। यह कार्य शिक्षक छात्रों से करवा सकते हैं।

क्रियान्वयनः खिलौने के प्रकार के अनुसार शिक्षक छात्रों को उसमें सम्मिलित विज्ञान और गणित के सिद्धांत समझा सकते हैं। उदाहरण के तौर पर–

(पहला) शिक्षक गुड्डा– गुड़िया दिखाकर छात्रों को शरीर के अंगों, उन अंगों के महत्व के बारे में समझा सकते हैं।

(दूसरा) गाड़ी के द्वारा शिक्षक छात्रों को संतुलन, दिशा, गति जैसे कई विषय समझा सकते हैं।

(तीसरा) किसी चाबी वाले खिलौने की मदद से शिक्षक छात्रों को इसके पीछे जुड़े विज्ञान के मूल सिद्धांत समझा सकते हैं।

ध्यान दें– यह स्वाभाविक है कि किसी भी कक्षा का छात्र अपनी आयु के अनुरूप ही टूटा हुआ खिलौना लेकर आएगा। छोटी उम्र के छात्र जहां एक ओर सरल खिलौनों के साथ खेलते हैं, वहीं बड़ी आयु के छात्रों के खिलौनों में कभी–कभी जटिल वैज्ञानिक सिद्धांत भी काम करते हैं। इसलिए इन खिलौनों से संबंधित वैज्ञानिक जानकारी रखना शिक्षक के लिए लाभप्रद रहता है।

5. ध्यान विधि से बढ़ाएं स्मरण शक्ति

संक्षिप्त परिचयः ध्यान केंद्रित करने की प्रक्रिया सीखने से छात्रों को केवल शैक्षिक ही नहीं, बल्कि जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी बहुत लाभ मिलता है। छात्रों में एकाग्रता तो बढ़ती ही है, आत्मबल और भावनात्मक संतुलन भी आता है। इस गतिविधि को नियमित रूप से कक्षा में क्रियान्वित करने से कई सकारात्मक दूरगामी परिणाम देखे गए हैं। विशेष बात यह है कि इस गतिविधि से ध्यान केंद्रित करने की प्रक्रिया रोचक बनती है, जिससे छात्रों को यह सरल और रुचिकर लगने लगती है।

कक्षा में संप्रयोगः यह गतिविधि प्रत्येक विषय के, प्रतिदिन पुनः अध्ययन के रूप में की जा सकती है।

योजना– शिक्षक छात्रों को ध्यान की मुद्रा में बैठाते हैं और अपनी पुस्तक/पाठ्य सामग्री सामने खोलकर रखने के लिए कहते हैं।

क्रियान्वयनः

- शिक्षक पहले छात्रों को अपने पाठ के अनुच्छेद/शब्द को ध्यान पूर्वक देखने अथवा पढने को कहते हैं। उसके बाद छात्रों को आंखें बंद करके पढ़े हुए पाठ को स्मरण करने के लिए कहा जाता है।
- उसके बाद छात्र अपनी अंगुली से कलम की भांति हथेली पर लिखने का प्रयास करते हैं।
- जहां कहीं वह विषय/पाठ भूलते हैं पुनः आँखे खोल कर पाठ पढ़ते है व पूरी प्रक्रिया फिर से दोहराते हैं। सामान्यतः दो से तीन बार में उन्हें पाठ्य वस्तु स्मरण हो जाती है। इसके उपरांत छात्र याद किए गए पाठ को पुनः अभ्यास पुस्तिका में लिखते हैं व मूल विषय वस्तु से मिलान कर त्रुटि ढूंढते हैं। त्रुटि होने पर प्रक्रिया पुनः दोहराते हैं।

ध्यान दें: यह गतिविधि कक्षा समाप्ति से 10 मिनट पूर्व करवाई जा सकती है, जिससे छात्रों को पढ़ा हुआ पाठ याद रहे।

6. शुभंकर से शिक्षण

संक्षिप्त परिचयः बाल मन निर्मल होता है। उन्हें सहजता और स्नेहभाव से पढ़ाया जाए, तो विद्यालय आना–पढ़ना–कक्षा की गतिविधियों में सम्मिलित होना उन्हें रोचक लगने लगता है। और यदि उन्हें विद्यालय में एक काल्पनिक मित्र या शुभंकर मिल जाए तो उनका मन पढ़ने में और अधिक लग सकता है। यह शुभंकर एक मित्र की भांति उनका विद्यालय में स्वागत कर सकता है, उन्हें कक्षा में विभिन्न विषयों की जानकारी दे सकता है। इससे कक्षा की नीरसता तो समाप्त होती ही है, छात्रों को प्रश्नोत्तर भी याद होने लगते हैं। इसी सोच के साथ शुभंकर से शिक्षण गतिविधि को क्रियान्वित किया जाता है। यह शुभंकर एक कठपुतली या चार्ट पेपर पर चित्र के माध्यम से भी बनाए जा सकते हैं। शिक्षक चाहें तो शुभंकर को सरल मगर रोचक नाम जैसे कि पिंकी या चीटू भी दे सकते हैं।

कक्षा में संप्रयोगः इस गतिविधि का उपयोग शिक्षक पाठ पूरा करने के उपरांत कर सकते हैं। साथ ही समय–समय पर आवश्यक बिन्दुओं पर प्रकाश डालने के लिए शुभंकर का उपयोग किया जा सकता है।

योजना/विधिः

- छात्रों की सहभागिता से शिक्षक शुभंकर का नाम और रंगरूप तय कर सकते हैं। इतना ही नहीं, शुभंकर के हाव–भाव, उसका पहनावा और उसके गुण में बच्चे मिलकर तय कर सकते हैं।
- उदाहरण के तौर पर यदि छात्र अपनी कक्षा के लिए पिंकी नामक शुभंकर की इच्छा रखते हैं, तो शिक्षक छात्रों के सहयोग से चार्ट पेपर पर एक बच्ची का रंगारग चित्र या कठपुलती बना सकते हैं। 'पिंकी' को गुलाबी रंग के कपड़े पहना कर उसके दो चोटी बना सकते हैं। पिंकी का चेहरा और हाव–भाव चंचल होंगे।
- शुभंकर के चित्र/कठपुतली कक्षा के प्रवेश द्वार और कक्षा के भीतर भी लगा सकते हैं। शुभंकर को बनाने के

लिए बेकार की वस्तुएं जैसे गत्ते, रंगीन कपड़े, चूड़ियां इत्यादि का इस्तेमाल भी किया जा सकता है।

◆ ध्यान रहे कि शुभंकर का एक हाथ किसी एक दिशा में 'इशारा' करते हुए हो।

क्रियान्वयनः कक्षा में हर दिन शिक्षक छात्रों के समक्ष बताएंगे कि 'पिंकी' उनके लिए कुछ प्रश्नों के उत्तर लेकर आई है। जिस तरफ पिंकी के हाथ का इशारा होगा, उस तरफ शिक्षक प्रश्नोत्तर साथ लगा सकते हैं, या फिर यदि कठपुलती बनाई गई हो तो उसके हाथ में चार्ट पेपर पर प्रश्नोत्तर लिखकर टांग भी सकते हैं। अन्य उदाहरण–

◆ पिंकी के कपड़ों के माध्यम से छात्रों को रंगों के नाम, विभिन्न मौसमों में पहने जाने वाली पोशाकों के बारे में समझाया जा सकता है।

◆ पिंकी के द्वारा छात्रों को अच्छी आदतों और व्यवहार के बारे में भी बताया जा सकता है। छात्रों को नमस्कार, धन्यवाद, good morning, thank you, sorry, इत्यादि जैसे शब्द आसानी से सिखाए जा सकते हैं।

ध्यान दें– शुभंकर का निर्माण और उपयोग पूर्णतः शिक्षक की कल्पनाशीलता पर निर्भर करता है। शुभंकर की पोशाक इत्यादि कुछ महीनों के बाद बदल भी सकते हैं।

7. शब्दकोश में वृद्धि

संक्षिप्त परिचयः शब्दकोश का ज्ञान छात्र धीरे–धीरे अर्जित करते है। पुस्तकों से, शिक्षकों से, सहपाठियों से छात्र नए–नए शब्द सीख कर, शब्दकोश में वृद्धि करते हैं। सीखने की इस प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए, इस गतिविधि में छात्रों को कक्षा में जहां तक संभव हो किसी एक अक्षर से बनने वाले शब्द लिखने को कहा जाता है। परिणाम स्वरूप कई नए शब्द छात्रों को पता चलते हैं।

कक्षा में संप्रयोगः यह गतिविधि प्रत्येक स्तर की कक्षा के लिए, किसी भी नए पाठ को पढ़ाने के बाद, पुनः अध्ययन के लिए की जा सकती है।

योजनाः शिक्षक छात्रों से निर्धारित विषय/पाठ की तैयारी गृह कार्य में करके आने के लिए कह सकते हैं।

क्रियान्वयनः इस गतिविधि का क्रियान्वयन चार चरणों में किया जा सकता है।

(पहला) शिक्षक छात्रों को किसी एक अक्षर, जैसे कि A, से शुरु होने वाले जितने संभव हो सके शब्दों को लिखने के लिए कहते हैं। इस कार्य को पूर्ण करने के लिए छात्रों को 3–5 मिनट का समय दिया जाता है।

(दूसरा) छात्रों ने जितने शब्द लिखे हैं, उसके आधार पर शिक्षक उन्हें अलग–अलग समूहों में बांट देते हैं। जैसे कि 5 से 10 शब्द लिखने वाले छात्रों को एक साथ बैठा सकते हैं, 10–15 शब्द लिखने वाले छात्र एक समूह का हिस्सा बन जाते हैं, और यह क्रम सर्वाधिक शब्द लिखने वाले छात्र पर समाप्त होता है।

(तीसरा) जो छात्र सर्वाधिक शब्द लिखता है, शिक्षक उसे कक्षा के समक्ष अपनी कॉपी में लिखे शब्दों को पढ़कर सुनाने के लिए कहा जाता है। इनमें से जो भी शब्द सभी/अन्य बच्चों की कॉपी में लिखे शब्दों से मेल खाता हैं, उस शब्द पर छात्र घेरा लगा देते हैं। जो भी शब्द छात्र द्वारा पढ़कर सुनाए गए शब्दों से मेल नहीं खाते हैं, अर्थात नए शब्द होते हैं, उन शब्दों को सभी बच्चे अपनी अपनी कॉपी में नोट करते हैं।

(चौथा) इसके बाद सबसे अधिक शब्द बनाने वाले दूसरे नंबर के बच्चे को खड़ा किया जाता है एवं जिन शब्दों पर उसकी कॉपी में घेरा नहीं लगा होता, वह शब्द सभी को बताता है।

इसी क्रम में नए–नए शब्द छात्रों को पता चलते हैं, और वह अपनी कॉपियों में नोट करते हैं। अंत में नए शब्दों की सूची को छात्र कक्षा में पढ़कर सुनाते हैं।

ध्यान दें: इस गतिविधि द्वारा हिंदी में शब्द को बनाना, गणित में सम–विषम, प्राकृत संख्या, अभाज्य संख्या, गुणज, विज्ञानं के धातु–अधातु के नाम, सजीव–निर्जीव का नाम, तत्व का नाम, यौगिक का नाम इत्यादि बनाने को कहा जा सकता है। ■